मीरां - गढ़न्तों से बाहर

राजीव कुमार

हैं तो तुलसी, सूर आदि भी, परंतु भारतीय जनमानस में भक्त कवि के रूप में जिन्होंने सबसे ज्यादा जगह बनाई है तथा लोक-जुबान पर जो सबसे ज्यादा चढ़े हुए हैं उनमें कबीर एवं मीरां सर्वप्रमुख हैं। इन दोनों में भी मीरां का चरित्र सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाला है। यही कारण है कि मध्यकालीन धार्मिक चरिताख्यानों, गीता प्रेस की पुस्तक से लेकर फिल्म, कॉमिक्स, कैसेट - हर कहीं उनकी मौजूदगी है। प्रथम ही उनकी प्रचरित छवि लोगों को रोमांच से भर देती है, आकर्षण का कारण बन जाती है। एक तो स्त्री और वह भी राजघराने की, जिसके लिए मर्यादा की तमाम बंदिशें रही होंगी, ऐसी स्त्री जो विशेष प्रयोजन से भी बाहर निकलने पर भी उत्सुकता का कारण बन जाती है, वह अगर हाथ में वीणा लेकर, गैरिक वस्त्र धारण कर कृष्ण के प्रेम में नाचती-गाती फिरे तो किसे न लुभाएगी। और फिर चमत्कार ऐसा घटता है कि राणा द्वारा भेजे गए विष के प्याले से भी उसका कुछ नहीं बिगड़ता। इस प्रकार रहस्य एवं उत्सुकता से भरी मीरां की छवि भारतीय मनसा में जगह बनाए हुए है। हिंदी का गंभीर साहित्य भी इससे बहुत अलग नहीं है। बस, आलोचकों ने एवं विमर्शकारों ने इधर किया है कि मीरां की कविताओं के कुछ अंशों के विशेष आग्रह के साथ पेश किया है जो तत्कालीन सत्ता को, जो जाहिर है पुरुषों की थी, को चुनौती देती है, लेकिन इस उत्साहपूर्ण प्रदर्शन में इन्होंने पृष्ठभूमि एवं संदर्भ की मनमानी व्याख्या कर दी और मीरां को अपने एजेंडे में ढाल लिया। इस प्रकार मीरां की कई-कई छवियाँ हमारे सामने मौजूद हैं। माधव हाड़ा की पुस्तक *पंचरंग चोला पहन सखी री* मीरां के संबंध में पूर्वाग्रह के साथ गढ़ी गई अब तक की मान्यताओं को पूरी तरह से बदल देती है। इस पुस्तक के लेखन में लेखक ने जिस प्रकार की शोधवृत्ति का परिचय दिया है वह एक प्रतिमान खड़ा करता है। जनश्रुति, राजों-रजवाड़ों के ऐतिहासिक ग्रंथ, औपनिवेशिक काल के पाश्चात्य इतिहासकार, उन्हीं की स्थापनाओं को मानदंड बनाने वाले भारतीय इतिहासकार, मध्यकालीन भक्ति आख्यानों से लेकर गीता प्रेस की पुस्तकें, डायमंड पॉकेट बुक्स आदि के कॉमिक्स-मीरा से संबंधित हर संभव लेखन की समीक्षा माधव हाड़ा ने इस पुस्तक में की है। इस समीक्षा के माध्यम से उन्होंने सप्रमाण उस प्रक्रिया को उद्घाटित किया है जिसमें मीरां को एक संघर्षशील आत्मचेतस स्वच्छंद स्त्री कवि, जिसने भक्ति के माध्यम से राजसत्ता की ज्यादतियों का प्रतिकार किया, को रोमानी, रहस्यमयी, पगलायी-सी भक्त-संत में बदल दिया गया। मीरां का जीवन अलग-अलग ऐतिहासिक दृष्टिकोण, साहित्यिक

समूह एवं धार्मिक समुदाय के लिए चारागाह-सा बन गया। सबने मीरां को अपनी हितों के अनुरूप इस तरह से ढाला कि वास्तविक मीरां तो खो ही गई, वह समय एवं समाज जिसमें मीरां थी और जिसने मीरां को संभव किया, तमाम तरह की प्रवादों का शिकार हो गया।

पंचरंग चोला पहन सखी री में माधव हाड़ा ने बड़े ही स्पष्ट रूप से मीरां की कैननाइजेशन की प्रक्रिया को बताया है। मीरां जो कि राजवाड़ों के ख्यात, बही आदि में नहीं है वह सर्वप्रथम कर्नड टॉड के राजस्थान केंद्रित इतिहास ग्रंथ में प्रकट होती है। कर्नड टॉड मीरां को *पवित्रात्मा संत भक्त असाधारण रहस्यवादी रूमानी* कवयित्री के रूप में पेश करते हैं। इस कैननाइजेशन को अस्वीकार करते हुए माधव हाड़ा स्पष्ट करते हैं कि यह मीरां की वास्तविक छवि नहीं है। यह छवि न तो इतिहाससम्मत है और न ही कर्नड टॉड ने इस गठंत में जनश्रुति का पूरा संज्ञान लिया है। कर्नल टॉड की निर्भरता मध्यकालीन चरित आख्यानों पर थी जिनके अपने सांप्रदायिक पूर्वाग्रह थे। दूसरी ओर टॉड सामंत राजपूतों के व्यक्तित्व पर रीझे हुए थे और इस पूर्वाग्रह ने उनकी स्थापनाओं को काफी हद तक प्रभावित किया। माधव हाड़ा के अनुसार, *...उसने उसकी छवि इस तरह से गढ़ी कि सामंतों को असुविधा लगने वाली उसकी चारित्रिक विशेषताएँ गौण होकर ध्यानाकर्षण नहीं रह गईं। उसने मीरां के संपूर्ण जीवन को एक रूमानी और रहस्यमय प्रेमाख्यान में बदल दिया।* यह आगे के इतिहासकारों के लिए दृष्टांत बना। ऐतिहासिक तथ्यों का थोड़ा-बहुत परिशोध करने के अतिरिक्त इन्होंने कर्नल टॉड के कैननाइजेशन को दुहरा-दुहराकर मीरां की रहस्यमयी छवि को पुष्ट किया। यह प्रक्रिया आगे भी जारी रही। गीता प्रेस की पुस्तक में मीरां को हिंदू आस्था की प्रतिमूर्ति के रूप में गढ़ा तो डायमंड पॉकेट बुक्स की पुस्तक में नये भूमंडलीकरण के बाद निर्मित उपभोक्तावादी सांस्कृतिक मिजाज की छाप है। माधव हाड़ा डायमंड बुक्स द्वारा *पीड़ा की आगार और रस की गागर* के रूप में गढ़ी गई मीरां के गढ़न्त के संदर्भ में लिखते हैं, *...ग्लोबलाइजेशन की प्रक्रिया से इस वर्ग का मनोजगत बहुत बदल गया है। यह वर्ग सदियों की नैतिक अंतर्बाधाओं से बाहर आ रहा है। उसके निजी जीवन में स्वतंत्रा स्त्री के लिए जगह नहीं है, लेकिन उसकी कामना में स्वतंत्र और परंपराभंजक रूमानी स्त्री का कब्जा हैं जाहिर है, अब उसकी काम्य स्त्री छवि पारंपरिक गीता प्रेसी छवि से अलग है।...मीरां की यह नई स्त्री छवि प्रमोन्मादिनी और परंपरा विरोधी स्त्री की है।* इनके अतिरिक्त अमर चित्रकथा हो या अन्य लेखन-सभी इसी इतर के मनमाने गढ़न्तों से निर्मित हैं, जिसका यथार्थ से कोई मेल नहीं है। उदाहरणस्वरूप अमर चित्रकथा में भोजराज वृंदावन से मीरां की वापसी का प्रयास करता है जो सिरे से झूठ है। यह ऐतिहासिक तथ्य

है जिसे पुस्तक में भी स्पष्ट किया गया है कि व्यापक रूप से मीरां के भक्त रूप का उभार-प्रसार और जीवन में संकट की शुरुआत पति भोजराज एवं ससुर सांगा की मृत्यु के पश्चात् होता है।

माधव हाड़ा ने इस पुस्तक में जहां मीरां के कैननाइजेशन एवं उसकी गढ़ी गई-प्रसारित की गई छवि के संदर्भ में झूठ का प्रतिकार किया है वहीं इस तथ्य को भी रेखांकित किया है कि आखिर वह कौन-सी ऐतिहासिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ थीं जिसमें मीरां का होना संभव हुआ। इसे स्पष्ट करते हुए माधव हाड़ा कहीं भी दुराग्रह का शिकार नहीं होते। वे पुस्तक में दर्शाते हैं कि मीरां में गहन भक्ति भावना तो है पर वह पगली, उन्मादिनी या फिर वृंदावन कृष्ण भक्त समूहों के साये में ढली हुई नहीं है, बल्कि वृंदावन के वर्चस्वशाली समूह से मीरां का धीमा टकराव होता है। मीरां की पृष्ठभूमि तथा उसकी लोक स्वीकारता के कारण वृंदावन का कृष्णभक्त समूह उसे अपने पाले में खींचना चाहता है। लेकिन आत्मचेतस, स्वच्छंद मीरां ऐसे किसी बंधन को स्वीकार करने को तैयार नहीं होती। इस पूरी प्रक्रिया में यह स्पष्ट होता है कि राग-विराग से परे, परम आह्लाद में डूबे ये भक्त समुदाय जितना निष्कपट दीखते हैं, कदाचित् थे नहीं। वर्चस्व की भावना इनके अंदर थी और वर्चस्व कामना की असफलता पर वे मर्यादित व्यवहार से भी चूक जाते थे। इस तथ्य से अवगत कराते हुए हाड़ा लिखते हैं, *...मीरां ने न तो वल्लभाचार्य से दीक्षा ली और न ही उन्हें कृष्ण का अवतार स्वीकार किया। वल्लभ संप्रदाय के लोगों ने इस कारण मीरां को एक नहीं तीन बार अपमानित किया।* किसी सांप्रदायिक सत्ता को चुनौती देने वाली मीरां अब तक अनुपस्थित ही थी। मीरां के इस पक्ष का रेखांकन पुस्तक की महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। इसी तरह राणाओं से मीरां के टकराव को माधव हाड़ा विमर्श के अतिवाद में नहीं ढालते। टॉड के कैननाइजेशन में सामंत राजपूतों से लगाव एवं सहानुभूति के बावजूद यूरोपीय श्रेष्ठता का दर्प प्रच्छन्न रूप से अंतर्निहित है। यह दर्प प्रचारित करता है कि भारतीय पिछड़े हुए हैं और भारतीय समाज ठहरा हुआ है। ऐसे में मीरां को प्रतिरोधी भक्त महिला की बजाय रहस्यमयी भक्त संत दिखाना उपनिवेशवाद के साम्य में था। टॉड के लिए भक्तों का धर्माख्यान सहयोगी रहा लेकिन हाड़ा इन धर्माख्यानों के विश्लेषण को अस्वीकार करते हैं। उनका कथन है- *मीरां को अपने दायरे के भीतर लेने वाले सांस्थानिक भक्ति संप्रदाय अपने आख्यानों में सजग भाव से मीरां के भक्त रूप की प्रतिष्ठा करते हैं और इस प्रक्रिया में वे उसकी स्त्री अस्मिता-साहस-स्वेच्छाचार आदि की धार को कमजोर करते हैं।*

धार्मिक आख्यानों एवं कर्नल टॉड के गढ़न्त के घालमेल से मीरां जिस रूप में प्रतिष्ठित हुई उससे अलग माधव हाड़ा ऐतिहासिक वस्तुस्थिति एवं उसकी तत्युगीन के बीच से मीरां को परखते हैं। वे मीरां को संघर्षशील स्त्री कवि के रूप में देखते हैं तथा उसे एक खास ऐतिहासिक परिस्थिति की

निर्मिति मानते हैं। उपनिवेशवादी इतिहासकारों के उलट न तो वे मीरां के समाज को ठहरा हुआ मानते हैं और न ही ब्राह्मण निर्देशों से परिचालित। मीरां के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने ऐतिहासिक घटना-चक्र, मेवाड़-मेड़ता की सामंती संरचना में अंतःपुर की स्त्रियों की हैसियत, जनसमुदाय की सक्रियता एवं सत्ता-वर्ग के साथ उसकी अंतर्क्रिया पर रोशनी डाली है। मीरां के लिए प्रतिकूल स्थिति का निर्माण ऐतिहासिक परिघटनाओं के कारण हुई। राणा सांगा के जीवित रहते जब धनाबाई एवं रत्नसिंह की मां-बेटे की जोड़ी ने सत्ता हथियाने का प्रयास किया था तो उसे असफल करने वालों में मीरां के पीहर वालों की प्रमुख भूमिका थी। कालांतर में जब रत्नसिंह सत्ता में आया तो उसने मीरां को सताया। रत्नसिंह के बाद सत्तारूढ़ हुआ विक्रमादित्य छिछोरे मिजाज का था उसे भी मीरां की स्वतंत्रता रास न आई और उसने भी मीरां को परेशान किया। मीरां की कविताओं में राणा यही लोग हैं। लेकिन विक्रमादित्य के छिछोरेपन से जनता में रोष या उसके कारण मीरां के लिए जनसमर्थन भी पैदा हुआ। मीरां की स्वीकार्यता बढ़ी। माधव हाड़ा के अनुसार, *...सामंत विक्रमादित्य से असंतुष्ट और अप्रसन्न थे, लोक में उसकी छवि मूर्ख और छिछोरे की थी इसलिए मीरां को इन दोनों का समर्थन मिला होगा।* मीरां के विकास में एक और वस्तुस्थिति का महत्त्वपूर्ण योगदान है जो उसकी दीन-हीन एवं हाशिए की प्रताड़ित स्थिति की छवि को भी तोड़ती है वह है उसका आर्थिक स्वावलंबन। मीरां के ससुर राणा सांगा ने मीरां को पुर और मांडल परगना हाथ-खर्च के लिए दिए थे। हाड़ा के अनुसार, *मीरां एक सामंत की विधवा थी, उसकी हैसियत एक जागीरदार की थी और उसके पास आर्थिक स्वावलंबन के साधन थे। वह संपन्न थीं और इतनी संपन्न थीं कि साधु-संतों को आतिथ्य-सत्कार में मुहरें देती थीं।*

मीरां का जीवन आगे चलकर जरूर अनिश्चित और कष्टमय हो गया जब वह विक्रमादित्य की ज्यादतियों से तंग आकर पीहर मेड़ता चली गई और मेड़ता भी मालदेव के आक्रमण से उजड़ गया। मीरां को कुछ दिन परिजनों के साथ भटकना पड़ा। इसी बीच वह वृंदावन और फिर द्वारिका चली गई। जमीन एवं परिजन से बिछुड़न का अवसाद मीरां को बार-बार आता है।

पंचरंग चोला पहन सखी री में माधव हाड़ा ने मीरां को संत भक्त कवि मात्र के रूप में पेश किए जाने का प्रत्याख्यान किया है। भक्त कवियों से अलग मीरां की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए वे लिखते हैं, *मीरां की कविता में उसकी वैयक्तिक पहचान, सांसारिक संबंध और सुख-दुख बहुत मुखर और पारदर्शी ढंग से मौजूद हैं। मीरां संत-भक्तों की तरह न तो इनके प्रति उदासीन है और न इनको अनदेखा करती है।* मीरां की काव्यगत विशिष्टता को रेखांकित करते हुए जिन प्रमुख बिंदुओं पर जोड़ दिया है, वे हैं-लोकोत्तर का आग्रही होने की बजाय लोक का गहन आकर्षण, इंद्रिय दमन

की बजाय इंद्रिय कामना की अभिव्यक्ति, सत्ता से सीधा और मूर्त टकराव, वैयक्तिक पहचान के प्रति आग्रह, स्थानीय बोली एवं मुहावरे का प्रचुर प्रयोग जो कि उनकी लोकसंबद्धता का सूचक है। भाषा के संदर्भ में मीरां की एक खास विशेषता को रेखांकित करते हुए माधव हाड़ा लिखते हैं, *मीरां की कविता की भाषा संत-भक्तों से अलग, स्त्रियों की खास भाषा है।...स्त्रियाँ भी जब संत-भक्त हो जाती हैं तो उनकी भाषा भी साधु भाषा हो जाती है। मध्यकालीन स्त्री-संत दयाबाई और सहजोबाई की भाषा यही साधु भाषा है।...इन स्त्री संतों की भाषा में इनके संत होने के तमाम साक्ष्य और लक्षण मौजूद हैं, लेकिन इसमें उनके स्त्री होने की कोई छाप नहीं है। मीरां अपने इन समकालीन पुरुष और महिला संत-भक्तों से अलग है। उनकी भाषा उसके स्त्री होने की सभी अभिलक्षणाएँ हैं।*

पंचरंग चोला पहन सखी री मीरां को पुनरान्वेषित करती है। यह मीरां को अतीत के तमाम गढ़न्तों एवं प्रवादों से बाहर निकालकर उसे ऐसे भक्त कवि के रूप में स्थापित करती है जो कृष्ण भक्त होने के बावजूद जगतिक सरोकार के प्रति चेतस थी। वह दीन-हीन न थी,न ही जोगिया बाना धारण किया था। उसके अवसाद के ऐतिहासिक कारण थे और उसका संघर्ष मूर्त था।